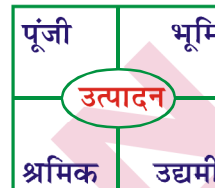


अर्थशास्त्र (ECONOMICS)

अर्थव्यवस्था - न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम उत्पादन को अर्थव्यवस्था कहते हैं। अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ को कहते हैं उनकी पुस्तक Wealth of Nation 1776 में प्रकाशित हुई। उन्होंने कर का सिद्धांत दिया भारतीय अर्थशास्त्र के जनक विश्वेश्वरैया को कहते हैं।

उत्पादन के 4 कारक

1. **पूँजी** - उत्पादन में लगाया गया धन पूँजी कहलाता है यह ऋण के रूप में भी हो सकता है।
2. **भूमि** - जिस स्थान पर उत्पादन किया जाता है उसे भूमि कहते हैं। यह किराया के स्थान पर भी हो सकता है।
3. **श्रमिक** - वस्तु के उत्पादन के लिए काम कर रहे मजदूरों को श्रमिक कहते हैं।
4. **उद्यमी** - कंपनी जिस व्यक्ति की होती है उसे उद्यमी कहते हैं।



पूँजी अर्थव्यवस्था - जब उत्पादन के सभी 4 कारकों पर निजी व्यक्ति का अधिकार हो उसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं। जापान, U.S.A., सिंगापुर, चीन, पूँजी, अर्थव्यवस्था में विकास तेजी से होता है। इसमें गरीब को ध्यान में न रखकर बाजार को ध्यान में रखा जाता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था - जब उत्पादन के 4 कारकों पर सरकार का अधिकार हो तो उसे समाजवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।

मिश्रित अर्थव्यवस्था - जब उत्पादन के चारों कारकों पर निजी तथा सार्वजनिक दोनों का अधिकार हो उसे मिश्रित अर्थव्यवस्था कहते हैं। भारत-पाकिस्तान-श्रीलंका

द्वैध अर्थव्यवस्था - वैसी अर्थव्यवस्था जिसमें परम्परागत तथा आधुनिक विधियों का प्रयोग हो उसे द्वैध अर्थव्यवस्था कहते हैं। जैसे - India.

समांतर अर्थव्यवस्था - कालाधन अत्यधिक बढ़ जाने को समांतर अर्थव्यवस्था कहते हैं। इसमें मौद्रिक नितियाँ कम प्रभावी होती हैं।

काला धन - वैसा धन जिसपर tax नहीं दिया जाता है उसे कालाधन कहते हैं। कालाधन की जानकारी सरकार को नहीं रहती है।

मौद्रिक आय - किसी श्रम के बदले मिले धन को मौद्रिक आय कहते हैं।

प्रयोज्य आय (Dibosable income) - मौद्रिक आय में से tax घटाने के बाद बचे धन को प्रयोज्य आय कहते हैं। यह पूरी तरह White money होता है।

वास्तविक आय (Real income) - प्रयोज्य आय में से देनदारी तथा ऋणभार को हटा देने पर बचा हुआ धन वास्तविक आय कहलाता है। महंगाई बढ़ने पर वास्तविक आय घट जाता है।

Q. नितिश ने अनुराधा से ₹ 4000 कर्ज लिये थे। यदि नितिश की आय ₹ 1 लाख है तथा नितिश पर 30% tax है। इसके सभी आय की गणना किजिए।

Ans. मौद्रिक आय = 1 लाख

प्रयोज्य आय = 1 लाख × 30% = 70,000

वास्तविक आय = 70,000 - 4000 = 66,000 Ans.

राष्ट्रीय आय (National income) - किसी देश के अंदर सभी घटक सरकारी तथा निजी से मिलने वाली कुल आय के योग्य राष्ट्रीय आय कहलाता है। राष्ट्रीय आय बाजार स्तर पर NNP होता है।

राष्ट्रीय आय = NNP - अप्रत्यक्ष कर

- ☞ भारत में राष्ट्रीय आय की गणना केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन करती है। इसकी स्थापना 1951 में हुई। 29 जून को सांख्यिकी दिवस मनाया जाता है। जो P.C महालनोबिस का जन्म दिवस है।
- ☞ भारत में प्रतिलिखित आय की गणना 1968 में दादाभाई नौरोजी ने उन्होंने इस समय भारत का प्रतिलिखित आय ₹ 20 निकाला था, जो सालाना था। इन्होंने अपनी पुस्तक Poverty and Brities Rule in India में लिखित है।
- वर्तमान में भारत का प्रतिव्यक्ति आय 1 लाख 12 हजार सालाना है। किसी देश के प्रगति को दिखाने का सबसे अच्छा माध्यम प्रति व्यक्ति आय है।

$$\text{प्रतिव्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$$

हिन्दू विकास दर - हिन्दू विकास दर का संबंध राष्ट्रीय आय से है। राष्ट्रीय आय की गणना स्थिर कीमत पर कि जाती है।

चालू किमत - चल रहे वित्तीय वर्ष चालू किमत कहते हैं। इस पर राष्ट्रीय आय सटीक नहीं निकलता है।

स्थिर किमत - बिते हुए वर्ष पर निकाला गया राष्ट्रीय आय स्थिर किमत कहलाता है। इसके लिए किसी वर्ष को हम आधार मान लेते हैं। भारत का आधार वर्ष 2017-18 है।

- ☞ राष्ट्रीय आय स्थिर किमत पर NNP को दर्शाता है। राष्ट्रीय आय की गणना की 3 विधियाँ हैं।

(1) उत्पादन विधि - इस विधि में उत्पादित समस्त वस्तु एवं सेवाओं का मूल्य को जोड़ा जाता है। यह GDP को दर्शाता है। इसमें दोहरे गणना की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जिस कारण अंतिम वस्तु के मूल्य को जोड़ा जाता है।

(2) आय गणना विधि - इस विधि द्वारा सभी क्षेत्रों के आय को जोड़ा जाता है। चाहे वह निजी क्षेत्र हो या सार्वजनिक क्षेत्र। भारत में राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन तथा आय दोनों विधि से किया जाता है।

(3) उपभोग विधि - इस विधि में उपयोग तथा बचत को जोड़ा जाता है। इसका प्रयोग विकसित देशों में किया जाता है। बचत विधि तथा मौद्रिक विधि राष्ट्रीय आय की गणना की विधि नहीं है।

सकल घरेलू उत्पाद [GDP (Gross Domestic Products)] - एक वर्ष में एक निश्चित सिमा के अंदर उत्पादित समस्त वस्तु एवं सेवा के मूल्य को GDP कहते हैं। सिमा के बाहर उत्पादित वस्तु को G.D.P. में शामिल नहीं किया जाता है।

$$\begin{aligned} \text{जैसे-} \quad \text{tata} &= 800 & \text{Man} &= 150 \\ \text{L. G} &= 300 & \text{GDP} &= 1100 \end{aligned}$$

सकल राष्ट्रीय उत्पाद [GNP (Gross National Products)] - यह पैसा राष्ट्र के काम का होता है। इसमें केवल भारतीय के आय को शामिल करते हैं।

माना भारतीय द्वारा विदेश में अर्जित आय x है, तथा विदेशी द्वारा भारत में अर्जित आय y है, तो

$$\boxed{GNP = GDP + (x - y)} \quad \text{Ram} = 150$$

$$\text{tata} = 800$$

$$\text{L.G} = 300$$

$$\text{GNP} = 1100 + (150 - 300) = 950$$

Note : $x - y$ को शुद्ध साधन आय कहते हैं।

Case I : यदि $x = y$ हो (संतुलित अर्थव्यवस्था) $GNP = GDP$

Case II : यदि $x > y$ हो (लाभ) $GNP > GDP$

Case III : यदि $x < y$ (हानि) $GNP < GDP$

Case IV : यदि $x = y = 0$ बन्द अर्थव्यवस्था $GNP = GDP$

Q. GDP तथा GNP का अंतर क्या कहलाता है।

Ans. $GDP - GNP$

$$GDP - (x + y)$$

$$(y - x) = \text{शुद्ध साधन आय}$$

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद [NNP (Net National Products)] - यह देश का सबसे शुद्ध पैसा होता है जब GNP में से मशीनी की टुट-फुट या घिसावट पर आय खर्च को घटा देते हैं, तो उसे NNP मिलता है।

$$\boxed{NNP = GNP - D} \quad \text{जहाँ } D = \text{मूल्यहास}$$

tata = 800 Ram = 150

L.G = 300 D = 50

GDP = 1100

GNP = 950

NNP = 950 - D = 950 - 50 = 50

Q. GNP तथा NNP का अंतर क्या होता है ?

Ans. GNP - NNP

GNP - (GNP - D)

GNP - GNP + D

D = मूल्यहास

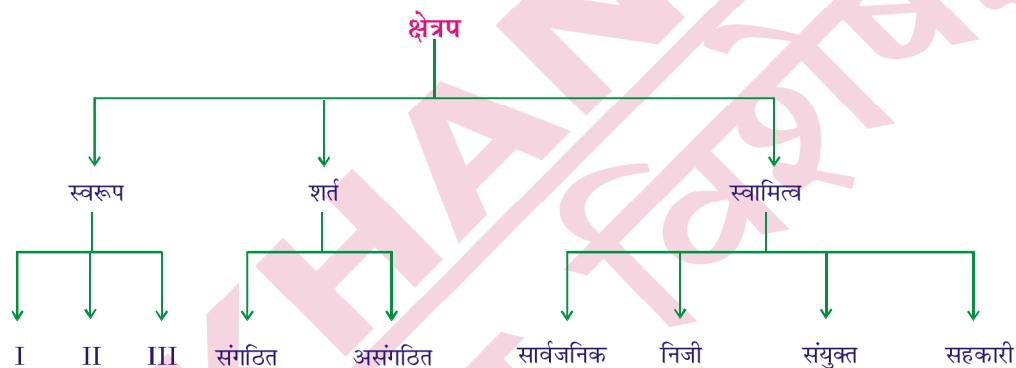
☞ किसी देश के जीवन स्तर को दर्शाने का सबसे अच्छा माध्य प्रति व्यक्ति आय है।

☞ किसी देश के प्रगति को दर्शाने का सबसे अच्छा माध्यम GDP होता है।

☞ मूल्य के आधार पर भारत की GDP छठे स्थान पर है। 1 नम्बर पर अमेरिका।

क्रय शक्ति सामर्थ्य [PPP (Purchasing Power Parity)] - PPP के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था तीसरे स्थान पर है। प्रथम तथा दूसरे स्थान पर चीन अमेरिका है।

अर्थव्यवस्था का क्षेत्रप - अर्थव्यवस्था में आय के माध्य को क्षेत्रप कहते हैं। इन्हें 3 भागों में बांटते हैं-



प्राथमिक क्षेत्र - जब आय का श्रोत सीधे प्राकृतिक से जुड़ा हो तो उसे प्राथमिक क्षेत्र कहते हैं।

Ex:- कृषि, पशुपालन, मत्स्य, खनन

द्वितीयक क्षेत्र - इसमें कारखानों को शामिल किया जाता है। इसमें निर्माण तथा विनिर्माण होता है।

Ex:- जैसे आटा, चक्की, गन्ना, मशीन, फैक्ट्री, Service sector

तृतीयक क्षेत्र - इसमें नौकरी व्यापार सेवा दुकान को शामिल करते हैं।

Ex:- परिवहन, Hospital, कोचिंग, नेता, खेल।

Note : तृतीयक सेक्टर में लोग बहुत कम लगे होते हैं। किन्तु आय बहुत अधिक होती है। जैसे-जैसे लोगों का विकास होता जाता है। वह प्राथमिक क्षेत्र को छोड़कर तृतीयक में चले जाते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रारंभ में किन्तु वर्तमान समय में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान मात्र 17%, द्वितीयक क्षेत्र का योग्य 29% तथा तृतीय सेक्टर का योगदान 55% है।

संगठित क्षेत्र - जिसमें नौकरी की शर्त समय और वेतन तीनों ही निश्चित हो उसे संगठित कहते हैं। जैसे- बड़े कम्पनी की नौकरी, सरकारी नौकरी संगठित क्षेत्र में सार्वजनिक रोजगार रेलवे तथा सेना में दिया है।

असंगठित क्षेत्र - इसमें नौकरी का समय वेतन तथा छुट्टी तीनों ही अनिश्चित रहता है। भारत में सार्वजनिक रोजगार असंगठित क्षेत्र में है। सबसे बड़ा असंगठित क्षेत्र कपड़ा उद्योग में है। प्राईवेट, कृषि, दुकान।

निजी क्षेत्र - इसके सभी क्षेत्र पर निजी व्यक्ति का हाथ होता है। इसे Private (P.V.T) कहते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य केवल लाभ कमाना है। पूंजी के आधार पर सबसे बड़ी Private कम्पनी Reliance जबकि कर की क्षमता के आधार पर सबसे बड़ी कम्पनी TATA है।

सार्वजनिक क्षेत्र - इस पर पूरी तरह सरकार का अधिकार होता है। इसे Public sector भी कहते हैं यह विकास तथा समाज कल्याण के लिए होता है। सबसे बड़ी Public क्षेत्र की कम्पनी रेलवे तथा महारत्न है।

संयुक्त क्षेत्र (P.P.P.) - इसमें निजी तथा सार्वजनिक दोनों की भागीदारी होती है। अतः इसे public private patnership कहते हैं। वर्तमान में भारत में सबसे तेजी से ppp का विकास हो रहा है। उदाहरण - मेट्रो

सरकारी (P.P.P.) – इसमें निजी तथा सार्वजनिक दोनों की भागीदारी होती है अतः इसे Public Private Patnership कहते हैं। वर्तमान में भारत में सबसे तेजी से ppp का विकास हो रहा है। उदाहरण-मेट्रो

सरकारी (Co-operative) – जब किसी कम्पनी का दिशा निदेशक सरकार देती है उसे co-operative कहते हैं।
Ex: Co-operative Bank co-operative का संचालन कई लोगों के समुह द्वारा होता है।

राष्ट्रीय नियोजन – संसाधनों के उचित उपयोग के लिए सरकार नियोजन (प्लानिंग) करती है। नियोजन के लिए 15 March, 1950 को योजना आयोग का गठन किया गया जो रूस के संविधान से लिया गया। योजना आयोग को 1 Jan, 2015 को निति (NITI) आयोग कर दिया गया, (National Instustation for transtorming India) योजना आयोग का मुख्य कार्य पंचवर्षीय योजना को बनाना है। प्रधानमंत्री योजना आयोग के अध्यक्ष होते हैं।

राष्ट्रीय विकास परिषद् – (NDC) इसकी स्थापना 6 August, 1952 को हुई। प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं तथा सभी राज्यों के मुख्यमंत्री तथा योजना आयोग के सदस्य इसके सदस्य रहते हैं यह पंचवर्षीय योजना का अनुमोदन करता है।

Remark :- योजना आयोग तथा राष्ट्रीय विकास परिषद् दोनों की चर्चा संविधान में नहीं अतः यह गैर संविधानिक है। इन दोनों की रचना संविधान के बाद हुई। अतः इसे संविधानोत्तर निकाय कहते हैं।

Note : योजना आयोग को सुपर कैबिनेट कहते हैं।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956) – यह हेराल डोमर मॉडल पर आधारित थी। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ाना था। इस योजना में कृषि उत्पादन अपने लक्ष्य से दोगुना बढ़ गया। अतः यह सफल योजना थी।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1961) – यह P.C. महानलोबिस के मॉडल पर आधारित थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारती उद्योग को स्थापित करना था। भारी उद्योगों के स्थापना के लिए विदेशों से अत्यधिक ऋण लेना पड़ा जिस कारण इस योजना को असफल माना जाता है। भारत के बड़े-बड़े स्टील प्लांट इसी योजना में लगे हैं। झारखण्ड का बोकारो स्टील प्लांट तीसरी पंचवर्षीय योजना में लगा है।

तिसरी पंचवर्षीय योजना (1961-1966) – इस योजना का उद्देश्य कृषि तथा उद्योग दोनों को बढ़ाना या यह अबतक की सबसे असफल योजना रही है। जिसके असफलता के तीन कारण हैं।

(i) 1962 चीन से युद्ध जिसके बाद नेहरू की मृत्यु हो गई।

(ii) 1965 से पाकिस्तान से युद्ध

(iii) 1966 का भिसन सूखा लाल बहादुर शास्त्री ने नारा दिया, जय जवान-जय किसान।

इस योजना के बाद उसाल तक कोई योजना नहीं बनी जिसे योजना अवकाश कहते हैं। योजना अवकाश 1966-69 तक था।

हरित क्रांति – यह तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंतिम समय में 1966 में प्रारंभ हुई, विश्व में इसकी जनक अमेरिकी वैज्ञानिक नारमन बोरलंग को मानते हैं। भारत में हरित क्रांति के जनक स्वामी नाथन हैं। हरितक्रांति शब्द विलियम कार्ड ने दिया था। हरित क्रांति में उन्नत बीज High yield verity के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। हरित क्रांति में मोटे अनाज के उत्पादन पर जोड़ दिया गया। इसमें गेहूँ का उत्पादन बढ़ गया, धान का उत्पादन को कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि दलहन एवं तिलहन का उत्पादन घट गया।

☞ हरित क्रांति का केन्द्र UP का सामली में था।

☞ हरित क्रांति में सर्वाधिक लाभ पंजाब को हुआ।

द्वितीय हरित क्रांति – इसमें अनुवांशिक रूप से वृद्धि किये गए फसल को बोते हैं ऐसे फसलों को जेनेटेकिली मोडीफाई (G.M.) फसल कहते हैं।

चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74) – इस योजना का उद्देश्य स्थिरता को प्राप्त करना था किंतु यह योजन अस्थिर हो गई क्योंकि, इस दौरान प्रतिकूल मौसम से फसल बर्बाद हो गई। उड़िसा में भीषण चक्रवात आ गए, 1971 में बंगलादेश युद्ध हो गया तथा सारनार्थी का संकट आ गया। जिस कारण यह योजना असफल हो गई।

पांचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-78) – इस योजना का मुख्य उद्देश्य गरीबी हटाना था। गरीबी हटाने के लिए 20 सूत्री कार्यक्रम लाया गया। 1975 में ग्रामीण बैंक की स्थापना की गई। यह योजना सरकार बदलने के लिए 1 साल पहले ही समाप्त कर दी गई।

अनवरत योजना [Rolling Plan (1978-80)] – इसे जनता पार्टी की सरकार ने लाया यह गांधीवादी मॉडल पर आधारित थी। इसे योजना को DDT लकरवाला ने तैयार किया रोलिंग प्लान की उपलब्धि की चर्चा स्पष्ट नहीं है।

छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85) – इस योजना में उद्योगीकरण पर मुख्य जोड़ दिया गया।

सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-90) – इसे डॉ. चक्रवर्ति ने तैयार किया। इसमें गरीबी को परिभाषित किया गया। 1989 में जवाहर रोजगार योजना प्रारंभ किया गया।

आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) – यह योजना दो वर्ष की देरी से शुरू हुई क्योंकि 1991 में आर्थिक संकट था। इस योजना को मनमोहन सिंह ने तैयार किया। इस योजना में मानव संसाधन, शिक्षा तथा उदारीकरण पर जोड़ दिया गया। जिस कारण इसे शिक्षा में समर्पित योजना कहते हैं।

नवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002) – यह अमरसेन मॉडल पर आधारित थी इसमें न्याय पूनः वितरण प्रणाली को अपनाया गया। यह योजना भूकम्प, कारगील युद्ध तथा 1996 के परमाणु परीक्षण के कारण असफल हो गई।

दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007) – इसमें शिक्षा को बढ़ाने के लिए सर्वशिक्षा अभियान प्रारंभ किया गया।

ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) – इसमें हर क्षेत्र के विकास के लिए सामावेशी विकास चलाया गया यह तीव्रतम विकास पर जोड़ दिया गया तथा 1 अप्रैल, 2010 को भिंडमिल योजना प्रारंभ की गई हालांकि इस योजना को संसद ने 2005 में मंजूरी दी थी इसी योजना में वन क्षेत्र में वृद्धि का लक्ष्य रखा गया किंतु वन 24% से घट कर 22% रह गया।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) – इसमें प्रशासनिक सुधार, भ्रष्टाचार में कमी का लक्ष्य रखा गया किंतु यह दोनों बढ़ गया। इस योजना में परमाणु ऊर्जा के बढ़ने का भी लक्ष्य रखा गया।

बेरोजगारी (Unemployment)

बेरोजगारी वह आर्थिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति को समय पर उसके योग्यता अनुसार उचित मूल्य पर रोजगार नहीं मिलता है। बेरोजगारी के कई स्वरूप होते हैं।

संरचनात्मक बेरोजगारी – जब मांग में परिवर्तन हो और मांग में Structural Unemployment कमी हो जाए तो इससे उत्पन्न बेरोजगारी को संरचनात्मक बेरोजगारी कहते हैं। यह दीर्घकालीन होता है। अस्फिति (धन की कमी) के कारण यह संरचालक या ढांचागत बेरोजगारी उत्पन्न होती है। भारत में सबसे ज्यादा संरचनात्मक बेरोजगारी पाई जाती है।

चक्रिय बेरोजगारी – जब मांग पुरी तरह समाप्त हो जाए अर्थात् समग्र माँग के अभाव फैंक्ट्री बंद जाए उससे जुड़े सभी लोग बेरोजगार होते हैं।

Ex : NOKIA / FACTORY → परिवहन → DEALER → Distributer → Wholesaller → Retailer → उपभोक्ता

घर्षणात्मक बेरोजगारी – जब तकनीकी विकास होता है तो पुराने तकनीक के लोग तब तक के लिए बेरोजगार हो जाते हैं। जब तक कि वो नई तकनीक सिख नहीं जाते हैं। अर्थात् नई नौकरी को खोजने के दौरान हुई बेरोजगारी घर्षणात्मक होती है। यह अल्पकालीन होती है। यह भारत के शहरी क्षेत्र में देखी जाती है।

छिपी बेरोजगारी/अदृश्य/प्रच्छन्द (Distingueus) – वह बेरोजगारी जिसमें मजदूर काम पर लगा हुआ तो दिखता है किंतु उसकी उत्पादकता (सिमांत उत्पादकता) शून्य होती है। अर्थात् उसे नौकरी से हटा दिया जाए तो उत्पादन में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। कृषि क्षेत्र में यही बेरोजगारी देखी जाती है।

मौसमी बेरोजगारी – वैसी बेरोजगारी जो किसी खास मौसम में आती है मौसमी बेरोजगारी कहलाती है।

Ex: कटाई के बाद किसान ठंडी में जुस

शिक्षित बेरोजगारी – जब किसी व्यक्ति को उसके योग्यता के आधार पर रोजगार नहीं मिलता है, तो उसे शिक्षित बेरोजगारी कहते हैं। इसमें मजदूर अपनी कुल क्षमता से कार्य नहीं करता है।

गरीबी (Proverty) – गरीबी वह पाँच मूलभूत चीजों में से एक या एक से अधिक की कमी हो जाती है। (i) भोजन, (ii) वस्त्र, (iii) आवास, (iv) शिक्षा, (v) चिकित्सा

योजना आयोग के अनुसार शहरी क्षेत्र में 2400 कैलोरी प्रतिदिन भोजन ग्रहण करने वाला व्यक्ति गरीब नहीं है। तेंदुलकर समिति के अधार पर कहा गया कि ग्रामीण क्षेत्र में ₹ 26 प्रतिदिन तथा शहरी क्षेत्र में ₹ 32 प्रति खर्च करने वाला गरीब नहीं है। विश्व बैंक के अनुसार 1 डॉलर प्रतिदिन खर्च करने वाला गरीब नहीं है। गरीबी नापने की दो विधि होती है-

- (i) सापेक्षित विधि द्वारा गरीबी मापने के लिए तुलना किया जाता है।
- (ii) निरपेक्ष विधि द्वारा गरीबी मापने के लिए एक न्यूनतम आय को आधार मान लिया जाता है। इस रेखा के ऊपर वाले लोगों को APL = Above Poverty Line तथा इस रेखा के निचे के लोगों को BPL = Below Poverty Line. देश में गरीबी तथा बेरोजगारी का आंकड़ा राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संस्था (National sample survey organisation (NSSO) जारी करती है।

- ☞ आय एवं सम्पत्ति की असमानता को दर्शाने के लिए गिनी गुणांक तथा लारेज वक्र का प्रयोग करते हैं।
- ☞ बेरोजगारी को दर्शाने के लिए फिलिप्स वक्र का प्रयोग करते हैं।
- ☞ प्रति व्यक्ति आय दर्शाने के लिए क्रूजेन्ट वक्र का प्रयोग करते हैं।

बजट

यह फ्रेंच भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है चमरा का थैला। 1773 ई० में ब्रिटेन के वित्तमंत्री वालपोल ने बजट शब्द का प्रयोग किया। भारत में बजट लार्ड कैनिंग के समय 1860-61 में जेम्स विलसन ने प्रस्तुत किया। जेम्स विलसन को बजट का जनक कहते हैं।

एकवर्त समिति के सिफारिश पर आम बजट को रेल बजट को अलग कर दिया।

- ☞ 2016 में पुनः रेल बजट एवं आम बजट को मिला दिया गया। भारत में बजट प्रस्तुत करने की परम्परा फरवरी महीने के अंतिम कार्य दिवस पर है।
- ☞ बजट को तैयार कराने का काम प्राकलन समिति करती है। सर्वाधिक बार बजट प्रस्तुत कार्य करने का श्रेय मोरारजी देसाई को जाता है। इन्होंने 10 बार बजट प्रस्तुत किया। बजट शाम को प्रस्तुत किया जाता है। किंतु यसवंत सिन्हा ने दोपहर में बजट प्रस्तुत किया।
- ☞ बजट का टीवी पर प्रसारण 1992 से प्रारम्भ हुआ। स्वतंत्र भारत का पहला बजट R.K. स्वर्ण मुखम सेट्टी ने किया।
- ☞ गणतंत्र भारत का प्रथम बजट जॉन मथाई (1950) में प्रस्तुत किया।
- ☞ बजट प्रस्तुत करने का अधिकार राष्ट्रपति को है किंतु वे वित्तमंत्री से प्रस्तुत करवाते हैं।

बजट शब्द की चर्चा संविधान में नहीं है बल्कि इसके स्थान वार्षिक वित्तिय विवरण शब्द की चर्चा है।

अनु० (112) – इसमें बजट के तहत वित्तमंत्री भिन्न-भिन्न कार्य के योजना को प्रस्तुत करते हैं।

अनु० (113) – इसमें प्राकलन के तहत खर्च का विवरण दिया जाता है।

अनु० (114) – विनियोग विधियक के तहत धन निकालने का प्रस्ताव रखा जाता है जबतक विनियोग विधायक पारित नहीं हो जाता है तबतक संसद से धन नहीं निकाला सकता इसी कारण संसद को राष्ट्रीय धन (कोष) का रक्षक कहते हैं।

अनु० (115) – इसमें अतिरिक्त अनुदान के तहत प्राकलन द्वारा दिए गए पैसे घट जाने पर पैसा निकाला जाता है।

अनु० (116) – इसमें लेखानुदान के द्वारा Advance अग्रिम (राशि) निकल ली जाती है।

बजट के प्रकार -

(1) शून्य आधारित बजट - जब बजट में पिछला लेन-देन को छोड़कर एकदम नए सिरे से बजट बनाया जाता है तो उसे शून्य आधारित बजट कहते हैं। भारत में शून्य आधारित बजट 1987-88 में राजीव गाँधी ने लाया तथा विश्व में शून्य आधारित का प्रथम प्रयोग 1973 अमेरिका के जिमी कार्स्टर ने किया शून्य आधारित बजट के जनक अमेरिका के पिटर फायर थे।

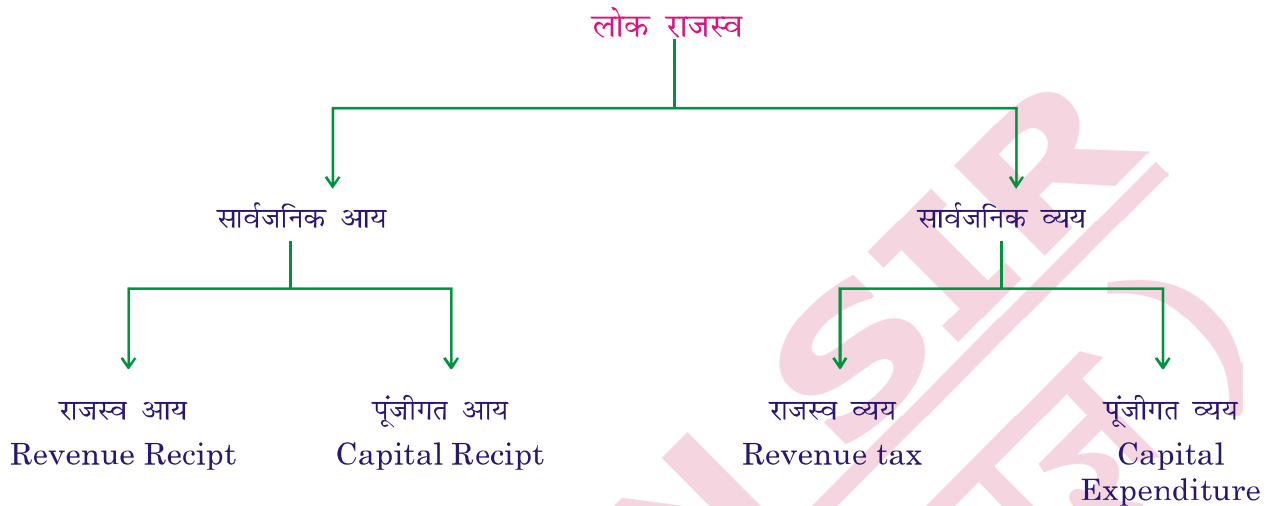
(2) जेन्डर बजट - जिस बजट में स्त्री पुरुष के लिए अलग से कुछ प्रावधान हो जेन्डर बजट कहलाता है। 2001 में महिला शक्तिकरण के बाद जेन्डर बजट को अधिक बढ़ावा दिया गया।

(3) संतुलित बजट - वैसा बजट जिसमें आय तथा व्यय बराबर हो संतुलित बजट कहलाता है।

(4) आउट कम बजट - जब सरकार पैसा को खर्च करती है उस धन द्वारा किए गए कार्य का रिपोर्ट कार्ड (प्रगति) को आउटकम बजट कहते हैं।

लोक राजस्व (Public Finance)

सरकारी लेनदेन को लोक राजस्व कहते हैं।



सार्वजनिक आय - सरकार के कुल आय को सार्वजनिक आय कहते हैं। यह दो प्रकार से होता है-

(1) राजस्व आय - वैसा आय जिसे सरकार लौटाती नहीं है। राजस्व आय कहलाता है अर्थात् इस पर सरकार की देनदारी (ऋणभार) शून्य रहता है। केन्द्र सरकार के राजस्व का सबसे बड़ा श्रोत निगम कर है। राज्य सरकार के राजस्व का सबसे बड़ा श्रोत बिक्री कर है।

(2) पूंजीगत आय - सरकार का वैसा धन जिसे सरकार को लौटाना पड़े अर्थात् जिसपर सरकार की देनदारी रहती है।
Ex: बैंक तथा बॉन्डपेपर के रूप में जमा धन।

Remark :- सरकार अपने पूंजीगत आय को बनाए रखने के लिए cashless पर विशेष जोड़ दे रही है।

सार्वजनिक व्यय - सरकार के कुल व्यय को सार्वजनिक व्यय कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है-

(1) पूंजीगत व्यय - यह एक वर्ष में प्रारम्भ होकर कई वर्षों तक धीरे-धीरे होता रहता है। यह बहुत बड़ा व्यय होता है। इसके द्वारा ढाचागत विकास होता है; जैसे सड़क पुल, airport

(2) राजस्व व्यय - यह व्यय अल्पकालीन तथा छोटा होता है, जिस वर्ष यह प्रारम्भ होता है उसी वर्ष समाप्त हो पाता है। Ex: सहायता राशि, सबसीडी, etc.

घाटा (Deficite) - जब व्यय आय से अधिक हो जाए तो उसे घाटा कहते हैं। घाटा कई प्रकार का होता है।

(i) राजस्व घाटा - राजस्व व्यय - राजस्व आय

(ii) पूंजीगत घाटा - पूंजीगत व्यय - पूंजीगत आय

(iii) सार्वजनिक घाटा - सार्वजनिक व्यय - सार्वजनिक आय

सार्वजनिक घाटा - पूंजीगत घाटा + राजस्व घाटा

Note : सार्वजनिक घाटा को बजट घाटा कहते हैं।

राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficite) - जब बजट घाटा में ऋणभार को जोड़ देते हैं तो उसे राजकोषीय घाटा कहते हैं।

Note : राजकोषीय घाटा सबसे प्रमुख घाटा है। जिस देश का राजकोषीय घाटा जितना अधिक होगा तो उस देश की प्रगति में उतनी अधिक बाधा आएगी।

प्राथमिक घाटा - राजकोषीय घाटा में ब्याज जोड़ने पर प्राथमिक घाटा कहते हैं।

मौद्रिक घाटा (Monetrial) - नए नोट को छपने पर आए खर्च करने के कारण लगने वाला घाटा, मौद्रिक घाटा कहलाएगा यह तभी लगेगा जब सरकार अत्यधिक नोट छापे या नोट बदल दे।

योजनागत व्यय - वैसा व्यय जिसका अनुमान पहले से ही लगाया जा चुके योजनागत व्यय कहलाता है।

Ex: वेतन, विकासात्मक परियोजनाएं।

गैर योजनागत व्यय - वैसा व्यय जिसका पूर्व अनुमान सरकार को न हो, गैर योजनागत व्यय कहलाता है।

Ex : सहायता राशि, सबसीडी, रक्षा व्यय।

धन के स्वरूप -

M_1 = लोगों का धन + Bank की मांग जमा + RBI का धन

M_2 = M_1 + डाकघर की बचत जमा

M_3 = M_1 + Bank का Fix Deposit

M_4 = M_3 + डाकघर की कुल जमा।

सबसे जादा तरलता M_1 की होती है। जैसे-जैसे M_1 M_4 की ओर जाता है। धन की मात्रा को बढ़ती है। किंतु तरलता घट जाती है। अकाशमिक स्थिति में M_1 का प्रयोग करते हैं।

M_4 एक विस्तृत मुद्रा है जबकि M_1 एक संकुचित मुद्रा है। बैंक को नियंत्रित करने के लिए बनाई गई निति को मौद्रिक निति कहते हैं। मौद्रिक निति M_3 पर आधारित होती है।

Remark :- सर्वाधिक तरलता, नगद > सोना > जमीन

कर (Tax)

यह एक अनिवार्य भुगतान है तो कानूनी रूप से देना ही पड़ता है। कर उतना ही निश्चित है जितना की मृत्यु क्योंकि यह सरकार के राजस्व का मुख्य श्रोत है। कराधान का सिद्धांत एडमस्मिथ ने दिया।

Tax के प्रकार -

(1) समानुपाती (Perpostional) – वैसा कर जो आय के घटने या बढ़ने से बदलता नहीं है समानुपाती कर कहलाता है। यह गरीब तथा अमीर को समान रूप से प्रभावित करता है।

(2) प्रगतिशील कर (Progressive Tax) – यह आय के बढ़ने से बढ़ता जाता है और इसका प्रभाव अमीर पर ज्यादा पड़ता है। यह आय एवं सम्पत्ति के असमानता को दूर करता है।

(3) अद्योगामी कर (Degressive Tax) – यह कर आय के बढ़ने से प्रारम्भ में बढ़ता है। किंतु एक निश्चित सीमा पर जाकर एक समान हो जाता है। इसमें प्रारंभ में प्रगतिशील के गुण होते हैं। बाद में समानुपाती के गुण होते हैं।

(4) प्रतिगामी कर (Regressive Tax) – यह कम आय वालों पर अधिक tax लगता है। यह गरीबों को अधिक प्रभावित करता है।

Tax – इसमें सरकार बिना कुछ दिए धन ले लेती है।

करापात (Incidence of Tax) – जिस व्यक्ति पर tax लगाया जाता है, उसे tax कहते हैं उसे करापात कहते हैं।

कराघात (Impact of Tax) – जो व्यक्ति tax की धन राशि देता है। उसे कराघात कहते हैं।

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax) – वैसा Tax जो जिस व्यक्ति पर लगाया अन्ततः उसी से वसूल किया जायगा Direct Tax कहलाता है। जैसे Direct Tax व्यक्ति पर लगाया जाता है। Eg: Income Tax, सम्पत्ति कर, निगम कर, उपहार कर

अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax) – यह जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है वह व्यक्ति उसका भुगतान नहीं करता बल्कि दूसरा व्यक्ति उसका भुगतान करता है। यह वस्तुओं पर लगाया जाता है। जैसे बिक्री कर, सीमा शुल्क, वाहन कर

अधिकार (Cess) – Tax के अतिरिक्त लगाया गया कर शेष कहलाता है। शेष की धनराशि के द्वारा सरकार प्रौढ़ शिक्षा सफाई, समाजिक सुरक्षा, इत्यादि का कार्य करती है।

विभिन्न प्रकार के कर:-

(i) निगम कर (Corporate Tax) – यह बड़े-बड़े कम्पनी पर लगाया जाता है। यह प्रत्यक्ष कर है। यह मुनाफे के 30% पर लगाया जाता है। केन्द्रसरकार के आय का सबसे बड़ा श्रोत निगम कर है। Ex: Tata, बिरला, Reliance

(ii) उपहार कर (Gift Tax) – यह प्रत्यक्ष कर है। जब 50 हजार से अधिक का Gift मिलता है, तो यह tax लगाया जाता है। यह 30% होता है। Ex: K.B.C में विजेता को 5 करोड़ के विजेता को 3.5 करोड़ रुपये मिलते हैं।

Note : विवाह या समधी द्वारा दिए गए उपहार पर यह Tax नहीं लगता है।

(iii) आयकर (Income Tax) – यह एक प्रत्यक्ष कर है जिसे केन्द्र सरकार लगाती है। Income Tax के निगरानी के लिए परमानेंट account number (PAN) पैन कार्ड दिया जाता है। भारत में Income Tax के चार Slab हैं।

ORS – 5 lakh = Nill

5 lakh – 10 lakh – 20% + 4 cess

10 lakh – 50 lakh – 30% + 4 cess

50 lakh – Above – 30% + 4 cess + 10 surcharge

Q. सोहन की आय 10 लाख वार्षिक है। वह ₹ 2 लाख अनाथ आश्रम ने दान दे देता है तथा 50 हजार का जीवन बीमा कम लेता है। 50 हजार वह म्यूचल फंड में लगता है, तो उसका Income Tax.

कर योग्य आय = 101 – 86 = 21

2 लाख × 24 = 48000

Income का ब्योरा देने के लिए कमपुटीशन बनना पड़ता है। कमपुटीशन के इनकम के आधार पर ही Income Tax ITR जमा करना होता है।

वस्तु एवं सेवा कर [GST (Goods and Service Tax)]

यह एक अप्रत्यक्ष कर है भारत का G.S.T. कनाडा मॉडल पर आधारित है। विश्व में सबसे ज्यादा GST की दर भारत में है। GST चोरी करने वाले को 5 साल जेल का प्रावधान होगा।

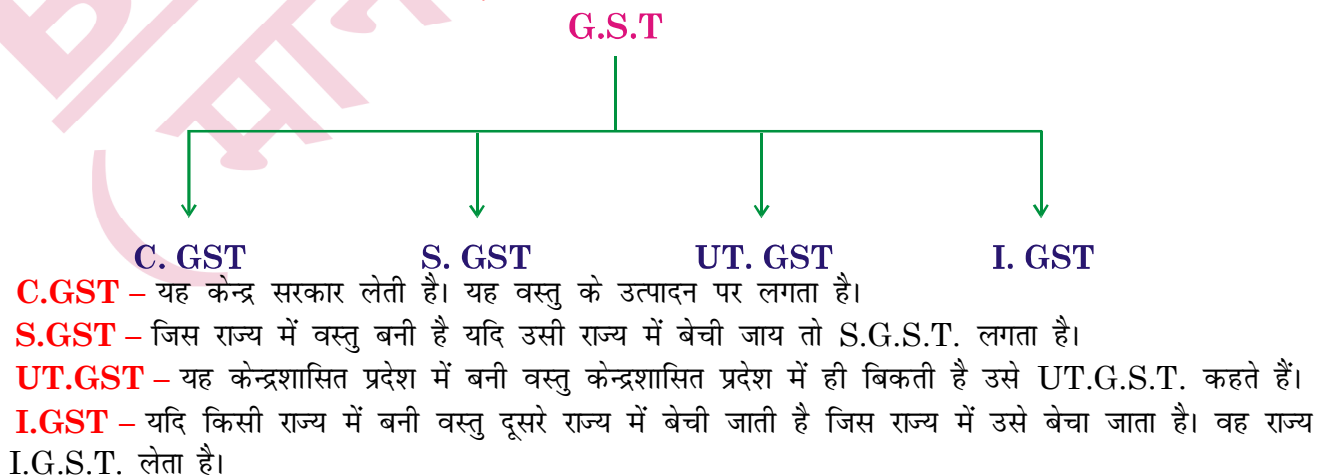
- ☞ G.S.T. पंजीकरा करने पर 15 अक्षर का पंजीकरण नम्बर दिया जाता है।
- ☞ G.S.T. के दायरे में 20 लाख से अधिक टर्न ओवर वाले व्यापारी को रखा गया है।
- ☞ G.S.T. के सभी निर्णय G.S.T. परिषद लेती है।
- ☞ G.S.T. परिषद में 33 सदस्य होते हैं।

- (1) 28 राज्यों के वित्तमंत्री
- (2) दिल्ली पांडिचेरी के वित्तमंत्री
- (3) केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री
- (4) केन्द्रीय वित्त मंत्री

Note : G.S.T. परिषद के अध्यक्ष वित्तमंत्री होते हैं। भारत में GST अरविन्द समिति के सिफारिश पर लागू किया गया GST लागू करने के लिए 101 तथा 122वाँ संशोधन किया गया।

- ☞ G.S.T. लागू करने वाले पहला राज्य असम था।
- ☞ पूरे भारत में 1 जुलाई, 2017 से लागू कर दिया गया। G.S.T. आने से सेवा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाप्त कर दिया गया।
- ☞ भारत में G.S.T. के चार slas बनाये गए हैं-
 - (i) **5%** – इसमें आवश्यक वस्तु को रखा गया है।
 - (ii) **12%** – इसमें उपयोगी वस्तु को रखा गया है।
 - (iii) **18%** – इसमें अरामदायक वस्तु को रखा है।
 - (iv) **28%** – इसमें विलस्तापूर्ण वस्तुओं को रखा गया है।

G.S.T. को चार श्रेणी में बाँटा गया है-



Note : चार प्रकार के G.S.T. में से C.G.S.T. अनिवार्य रूप से देना ही है। शेष तीन G.S.T. में से कोई एक G.S.T. लगेगा।

Eg :

G.S.T = 5%

C. GST = 2.5%

I. GST = 2.5%

VAT (Value Added Tax) – इसको सबसे पहले फ्रांस ने अपनाया था भारत में इसे L.K. झा समिति के सिफारिश पर लागू किया गया। यह अप्रत्यक्ष कर है इसे बिक्री पर राज्य सरकार लेती थी।

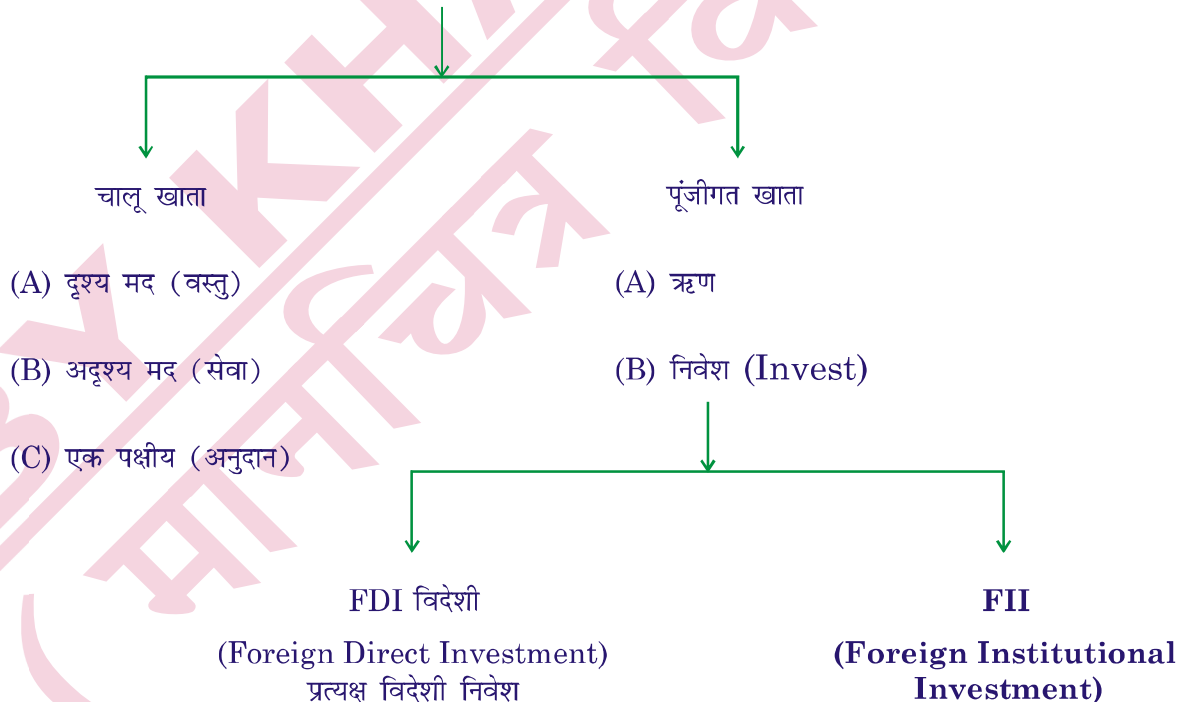
Note : Central Value Added Tax (CENVET) केन्द्र सरकार उत्पादन पर लेती थी। Cenvet अप्रत्यक्ष कर था। Vet Tax को सबसे पहले 2005 में हरियाणा ने माना था जबकि सबसे अंत 2008 U.P. ने माना।

सेवाकर (Service Tax) – यह राज्य सरकार लेती थी। इसे 1994 – 95 में लाया गया।

Note : वर्तमान में Vet तथा Service Tax को समाप्त करके GST लाया गया है।

- ☞ वैसा पैसा Black Money कहलाता है जो सरकार को नहीं दिया जाता है।
- ☞ कुछ Tax जिसे केन्द्र सरकार लगाती है तथा केन्द्र सरकार ही उपयोग करती है। जैसे निगमकर-सीमा शुल्क
- ☞ कुछ Tax केन्द्र सरकार लगाती है किंतु केन्द्र एवं राज्य दोनों मिलकर रख लेते हैं। Eg: उत्पाद शुल्क Income Tax
- ☞ कुछ Tax केन्द्र सरकार लगाती है किंतु राज्य सरकार को दे देती है। Eg : विज्ञापन कर
- ☞ कुछ कर राज्य सरकार लगाती है और राज्य सरकार रख लेती है। Eg : कृषि कर, वाहन पंजीकरण
- ☞ स्थानीय सरकार के कारण इसे पंचायत एवं नगरपालिका के लोग लेते हैं। जैसे मालगुजारी, भवन कर, खेती कर, चुंगीकर

भुगतान संतुलन (चलउमदज ठसंदबम)



व्यापार संतुलन (Trade Balance) – कई देशों के बीच जब व्यापार होता है, तो निर्यात एवं आयात के अंतर को व्यापार संतुलन कहते हैं। यदि यह धनात्मक है तो देश के लिए अच्छा है। Vise-Visa (ठीक इसका उल्टा) भारत चीन को 18 अरब डालर (वार्षिका) का निर्यात करता है। जब कि चीन से 72 अरब डॉलर का आयात करता है। तो भारत का व्यापार संतुलन ज्ञात करे।

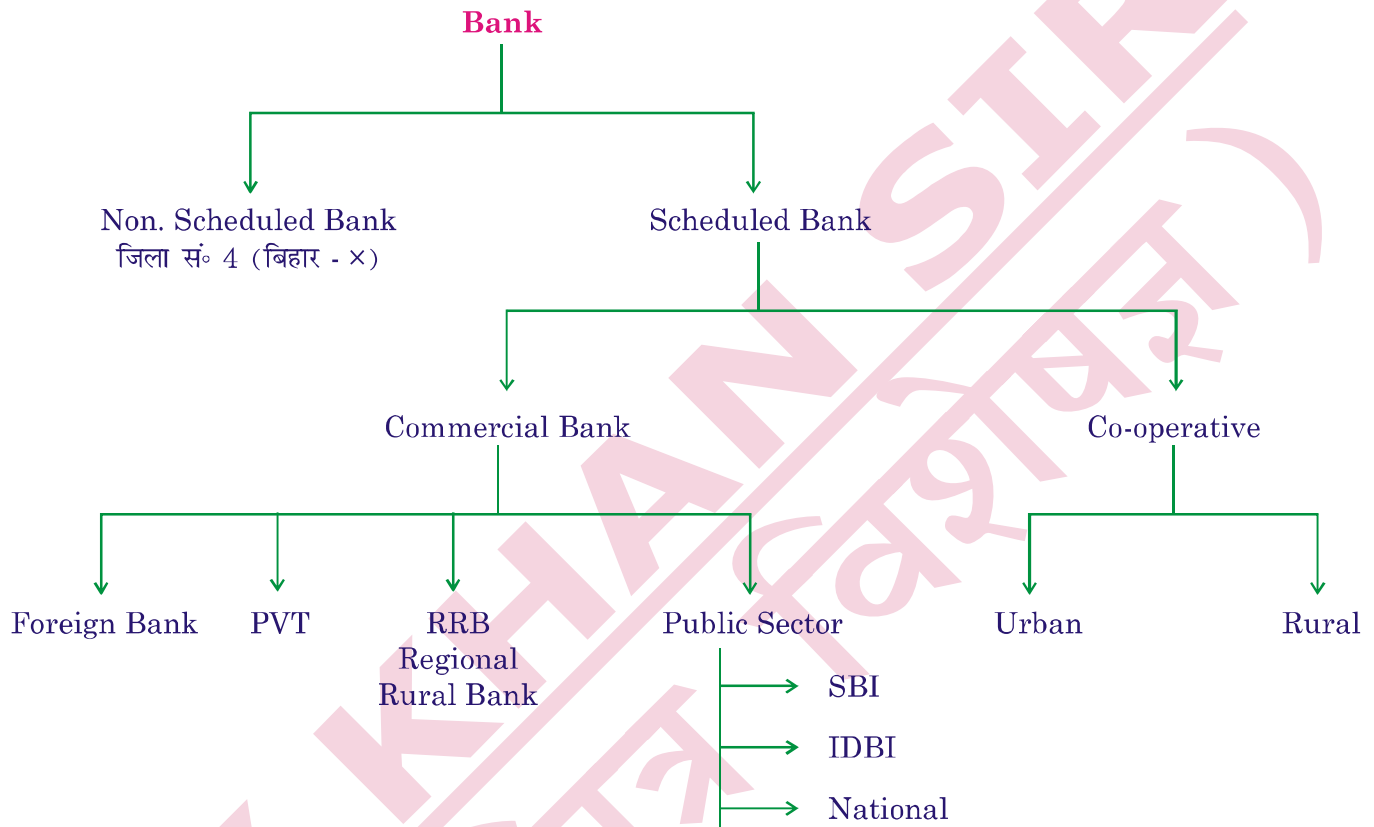
- ★ निर्यात – आयात
- 18 – 72
- ⇒ 54 अरब डॉलर

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश [FDI (Foreign Direct Investment)] – जब कोई विदेशी बैंक या संस्था भारत में निवेश करती है उसे FDI कहते हैं। इससे देश में रोजगार बढ़ता है।

FII (Foreign Institutional Investment)

जब कोई विदेशी बैंक या संस्था भारत में निवेश करती है उसे FII कहते हैं।

BANK



- ★ Bank of Hindustan (पहला भारतीय England द्वारा)
- ★ बम्बई + मद्रास + बंगाल + Imperial Bank (England द्वारा)
- ★ भारत का पहला Bank, Bank of Hindustan था इसे अंग्रेजों ने 1770 में खोला था।
- ★ भारतीय तथा अंग्रेजों द्वारा मिलकर खोला गया पहला Bank, अवध Commercial Bank (1881) (इलाहाबाद)
- ★ भारतीय द्वारा खोला गया पहला भारतीय Bank 1894 का Punjab National Bank
- ★ 1806 में Bank of Bengal.
- ★ 1843 में Bank of Madras खोला गया।
- ★ इन तीनों Banks को 1921 में मिलकर Imperial Bank की स्थापना की गई।
- ★ 1 July, 1955 को गोस्वाला समिति के सिफारिश पर Imperial का नाम बदलकर SBI कर दिया गया इसी वर्ष SBI का राष्ट्रीकरण किया गया।
- ☞ SBI का मुख्यालय मुम्बई है। सर्वाधिक शाखा कर्मचारी धन, ATM ब्रांच SBI के हैं। प्रारंभ के SBI के आठ सहयोगी बैंक भी थे किंतु इन्हें SBI में मिला लिया गया। भारत का पहला ATM 2004 में SBI ने लाया।
- ★ **राष्ट्रीय महिला बैंक** – इसकी स्थापना 19 नवम्बर 2013 का मुम्बई में हुई इसमें यह प्रावधान था कि खाता धारक केवल महिलायें होंगी किन्तु यह बैंक सफल नहीं हो सका अन्ततः उसे SBI में मिला दिया गया।
- ★ **आई डी बी आई बैंक (IDBI Bank)** – प्रारंभ में इसकी स्थापना 1964 में RBI के सहायक बैंक के रूप में हुई थी। किन्तु 1976 में इसे अगल बैंक घोषित कर दिया गया इसका मुख्यालय मुम्बई है।

पंजाब नेशनल बैंक [PNB(IDBI Bank)] - इसकी स्थापना 1894 में लाला लाजपत राय ने किया इसका मुख्यालय दिल्ली में है।

बैंक ऑफ बड़ौदा - इसकी स्थापना 1908 में हुई इसका मुख्यालय बड़ौदा है। SBI के बाद विदेशों में सर्वाधिक शाखा बैंक ऑफ बरोदरा की है।

बैंक ऑफ इलाहाबाद - इसकी स्थापना 1869 में हुई इसका मुख्यालय कलकत्ता है। बिहार में खुलने वाला यह पहला बैंक है।

बैंक का राष्ट्रीकरण - प्राइवेट बैंक को सरकारी कर देना राष्ट्रीकरण कहलाता है। भारत में राष्ट्रीकरण दो चरणों में हुआ।

प्रथम चरण - वैसे बैंक जिनकी पूंजी ₹ 50 करोड़ से अधिक थी उन्हें 1969 में राष्ट्रीकरण कर दिया गया। प्रथम चरण में 14 बैंक का राष्ट्रीकरण हुआ।

बैंक	स्थापना	बैंक	स्थापना
बैंक ऑफ इलाहाबाद -	1865	पंजाब नेशनल बैंक -	1894
बैंक ऑफ इंडिया -	1906	केनरा बैंक -	1906
इण्डियन बैंक -	1907	बैंक ऑफ बड़ौदा -	1908
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया -	1911	यूनियन बैंक -	1919
सिंडिकेट बैंक -	1925	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	1935
इण्डियन ओवर सीज बैंक -	1937	देना बैंक	1939
यूको बैंक	1943	यूनाइटेड बैंक	1950

द्वितीय चरण - वैसे बैंक जिनकी कुल जमा पूंजी 200 करोड़ से अधिक थी। इनका राष्ट्रीकरण 1980 में हुआ। दूसरे चरण में 6 बैंक का राष्ट्रीकरण हुआ-

(i) कारपोरेशन बैंक - 1906 (ii) पंजाब एवं सिंध बैंक - 1908

(iii) आन्ध्रा बैंक - 1923 (iv) विजया बैंक - 1933

(v) न्यू बैंक ऑफ इण्डिया - 1936 (v) ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स - 1943

Remark :- विजया बैंक तथा देना बैंक को 2019 में बैंक ऑफ बड़ौदा में मिला दिया गया। इस प्रकार राष्ट्रीकृत बैंक की संख्या 19 से घटकर 17 हो गई है। वर्तमान में राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या 12 है।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक [RRB (Regional Rural Bank)] - इसकी स्थापना पांचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 2 अक्टूबर, 1975 को हुई इसकी कुल संख्या 196 है। सर्वाधिक RRB उत्तर प्रदेश गोवा तथा सिक्किम में RRB में नहीं है। 1987 में गठित केलकर समिति के सिफारिश पर यह निर्णय लिया गया कि अब RRB की संख्या नहीं बढ़ेगी केवल शाखा बढ़ेगी। RRB का उद्देश्य ग्रामीण किसानों को सस्ता ऋण उपलब्ध करना है। RRB में 50% हिस्सेदारी केन्द्र की होती है। 15% हिस्सेदारी राज्य की होती है। 35% हिस्सेदारी प्रवर्तक बैंक (Permotional Bank) की होती है।

प्राइवेट बैंक (Private Bank) - ये बैंक RBI के अधीन काम करते हैं। किंतु इन पर निजी सोयमीत होता है।

आई सी आई सी आई बैंक (ICICI Bank) - इसकी स्थापना 1994 में हुई इसका मुख्यालय बड़ौदा है, यह निजी क्षेत्र का सबसे बड़ा बैंक है।

HDFC Bank (Housing Development Finance Corporation Bank) - इसकी स्थापना 1994 में हुई इसका मुख्यालय मुम्बई है। यह निजी क्षेत्र का दूसरा सबसे बड़ा बैंक है। सुविधा देने के मामले में यह भारत का सबसे बड़ा बैंक है।

AXIS Bank - इसकी स्थापना 1994 में हुई है इसका मुख्यालय अहमदाबाद है। यह निजी क्षेत्र का तिसरा सबसे बड़ा बैंक है। UTI बैंक का नाम 2007 में AXIS रख दिया गया। UTI की स्थापना 1964 में हुई थी। 1994 में UTI दो भागों में बँट गया।

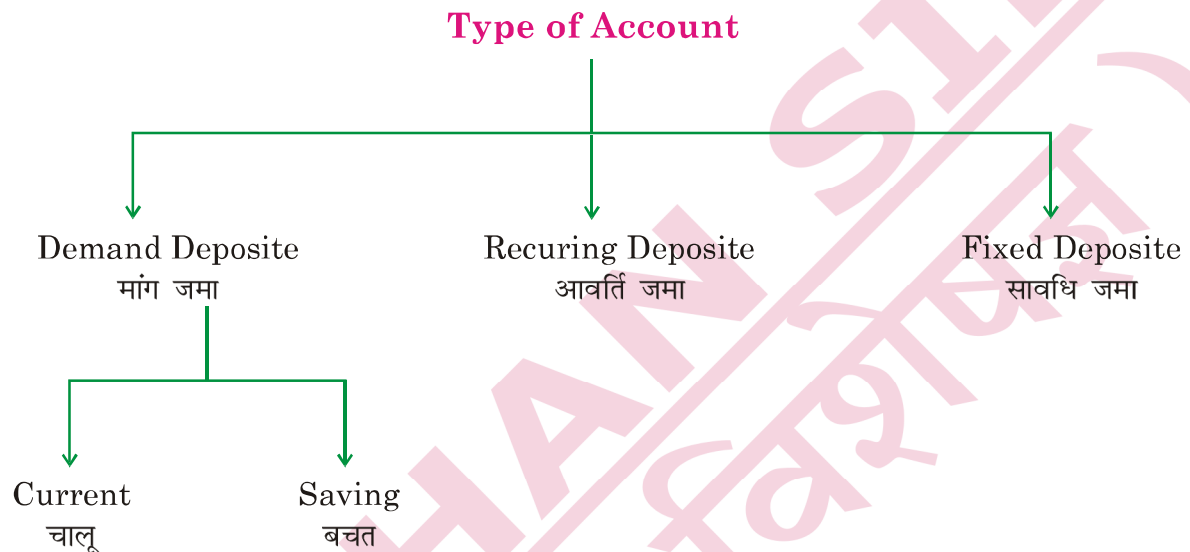
UTI म्यूचयल फण्ड UTI बैंक

EXIM Bank – यह बैंक केवल आयात-निर्यात के लिए केन्द्र सरकार को धन उपलब्ध करता है। अतः इसे Export Import बैंक कहते हैं।

NABARD (National Bank of Agriculture and Rural Development) – इसकी स्थापना 12 जुलाई, 1982 को हुई इसका मुख्यालय मुम्बई है। यह बैंक न होकर के एक वित्तीय संस्था है।

ATM (Automated Teller Machine) – इसकी खोज 1967 जॉन सेकड ने किया भारत में पहला ATM 2004 में SBI ने लाया। इसे कोच्ची में झनकार नामक स्टीमर में लगाया गया।

खाता [Account (A/C)]



मांग जमा – इस प्रकार की जमा को कभी भी निकाला जा सकता है।

चालू खाता – यह बिजनेस के लिए होता है इसमें अधिकतम लेन-देन की सीमा नहीं होती है। इस पर ब्याज नहीं मिलता है।

बचत खाता – यह छोटे मोटे बचत के लिए होता है। इसमें अधिक धन नहीं रख सकते हैं। इसमें अधिकतम लेन-देन की सीमा निर्धारित रहती है। इस पर लगभग 4% ब्याज दिया जाता है।

आवर्ति जमा [R.D. (Recurring Deposit)] – इसमें एक निश्चित धनराशि को निश्चित समय अंतराल के बाद जमा किया जाता है। इसमें लगभग 6% ब्याज होता है।

(Fixed Deposit) – इस पर एक निश्चित धन को एक निश्चित समय में एक ही बार में जमा करना F.D. 7 days–से–10 साल तक के लिए जमा हो सकता है। इसपर लगभग 10% ब्याज मिलता है।

चेक – यह एकाउंट में रखे धन को निकालने का एक साधन है।

बिमा (Insurance)

भारत में बिमा की सबसे बड़ी कम्पनी LIC है। इसकी स्थापना 1 September, 1956 को हुई। इसका मुख्यालय मुम्बई है।

जेनरल इन्सोरेंस बिमा (GIC) – यह बिमा क्षेत्र की दूसरी सबसे बड़ी कम्पनी है इसकी स्थापना 22 November, 1972 को हुई। इसका मुख्यालय मुम्बई है।

प्रिमियम – LIC के किस्त को प्रिमियम कहा जाता है।

IRDA (इन्सोरेंस रेगुलटरी एण्ड डेवलपमेंट ऑथोरिटी) – यह बिमा कम्पनी पर निगरानी रखती है इसकी स्थापना 1999 में हुई इसका मुख्यालय हैदराबाद है।

KYC (Know Your Customer) – बैंक का बिमा कम्पनी ग्राहक की पहचान के लिए आधार कार्ड, पैनकार्ड या Voter ID मांगती है। जिसे KYC कहते हैं।

R.B.I. (Reserve Bank of India)

रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया 1934 में गठित हिल्टन यंग के सिफारिश पर 1 April, 1935 को RBI का गठन हुआ। हिल्टन यंग आयोग ने इसे केन्द्रीय बैंक का दर्जा दिया। इसके पहले अध्यक्ष ओसबर्न स्मिथ थे। पहले भारतीय अध्यक्ष C.D. देशमुख थे। वर्तमान गवर्नर शक्तिकांत दास हैं।

- ☞ RBI की स्थापना 100, 100 के 5 लाख शेयर को मिलाकर हुई थी किंतु 1 January, 1949 को सरकार ने इसका राष्ट्रीकरण कर दिया।
- ☞ इसका मुख्यालय मुम्बई है जबकि चार क्षेत्रीय कार्यालय हैं। Delhi, Mumbai, Chennai, Kolkatta.
- ☞ इसका विदेश में कार्यालय लंदन में है। RBI हरेक राज्य के वित्तिय लेनदेन को देखती है। किंतु जम्मूकश्मीर के लेनदेन को SBI देखती है।
- ☞ RBI का लेखा वर्ष 1 July से 30 जून तक होता है। RBI के कार्यों का संचालन 21 सदस्यों वाले बोर्ड द्वारा होता है।

1 = गवर्नर

4 = Deputy गवर्नर

4 = क्षेत्रीय ब्रांच के गवर्नर (अध्यक्ष)

2 = वित्त मंत्रालय के अधिकारी

10 = अर्थशास्त्र के अच्छे जानकार

RBI के कार्य

- (i) सरकारी बैंक के रूप में कार्य।
- (ii) अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना।
- (iii) आर्थिक आकरे जारी करना।
- (iv) मुद्रा का विनिमय (Exchange)
- (v) बैंकों पर नियंत्रण रखना।
- (vi) शाख नियंत्रण
- (vii) नोट का निर्गमन

साख नियंत्रण (Credit Control) – बाजार की तरलता को नियंत्रित करना साख नियंत्रण कहलाता है। इसके लिए RBI मौद्रिक नीति को अपनाती है। मौद्रिक नीति के अंतर्गत M.S.F, Repo rate, Bank rate, CRR, SLR खुले बाजार की नीति (प्रतिभूति की बिक्री)

MSF (Marginal Standing Facility) – RBI बैंकों को एक दिन के लिए जिस ब्याज दर पर ऋण देती है उसे MSF कहते हैं।

Repo rate – RBI बैंकों को 2 से 14 दिन के लिए जिस दर पर ऋण देती है उसे Repo rate कहते हैं। यह लगभग 6% है।

Bank Rate – RBI Bank को 14 दिन से अधिक के लिए (दीर्घकालित) जिस ब्याज दर पर ऋण देती है उसे Bank Rate कहते हैं।

MSF > Repo rate > Bank rate

Reverse repo rate – जब बैंक अपना अतिरिक्त धन RBI के पास रखते हैं, तो RBI द्वारा दिया गया ब्याज दर Reverse Repo rate कहलाता है।

CRR (Cash Reserve Ratio) – नगद आरक्षित अनुपात बैंकों को अपने कुल जमा का 4% RBI के पास रखना होता है। जिस पर RBI कोई भी ब्याज नहीं देती।

SLR (Statutory Liquidity Ratio) – वैधानिक तरलता अनुपात बैंकों को अपने कुल जमा का लगभग 22% खुद अपने पास रखना होता है। जिसे SLR कहते हैं। SLR 20 से 40% हो सकता है।

PLR (Primary Lending Rate) – बैंक ग्राहकों को जिस दर पर ब्याज देती है उसे PLR कहते हैं।

Base Rate – बैंक अपने चुनिंदा ग्राहक को न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण देती है। Base Rate कहते हैं।

तरलता – नगद पैसा को तरलता कहा जाता है। यह अर्थ व्यवस्था के लिए सबसे घातक है।

मुद्रास्फीति - तरलता के बढ़ जाने से मुद्रा स्फीति बढ़ जाती है। जिससे महंगाई बढ़ जाती है।

तरलता × स्फीति × महंगाई

Repo, CRR, SLR × $\frac{1}{\text{तरलता}}$

NEER (Normalise effective exchange rate का निर्धारण IMF करती है)

इसके द्वारा एक मुद्रा का दूसरे मुद्रा से तुलना किया जाता है।

Dollar का NEER ₹ 70 होता है। NEER का संबंध बैंकिंग से नहीं है।

खुले बाजार की नीति - प्रतिभुतियों की खरीद बिक्री खुले बाजार की नीति कहलाती है। यह मौद्रिक नीति का ही हिस्सा है। इसके अंतर्गत Bond Paper, LIC etc को रखते हैं। जब सरकार प्रतिभुतियों को बेचती है तो तरलता घट जाती है। कालाधन के अधिकता से मौद्रिक नितियां अधिक प्रभावित हो पाती है। इसी कारण मोदीजी ने नोट बदल दिया। कालाधन को समांतर अर्थव्यवस्था कहते हैं।

नोट का निर्गमण - ₹ 1 के नोट पर वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते हैं जब कि उससे ऊपर के मूल्य के नोट RBI जारी करती है। नोट जारी करने के लिए RBI आरक्षित कोष प्रणाली को अपनाती थी जिसके तहत RBI को 400 करोड़ मूल्य रखना होता था। जिसमें 215 करोड़ मूल्य का भारतीय रुपया या सोना रखा जाता था, जबकि शेष 185 करोड़ मूल्य का विदेशी मुद्रा रखा जाता था।

वर्तमान में RBI नोट छापने के लिए न्यूनतम आरक्षित कोष प्रणाली को अपनाती है। इसके तहत RBI को ₹ 200 करोड़ रुपया रखने होते हैं। इसमें 115 करोड़ मूल्य का भारतीय रुपया, या सोना होता है। जबकि शेष 85 करोड़ मूल्य का विदेशी मुद्रा रखनी होती है।

भारत के नोट छापने के चार प्रेस हैं। जिसमें देवदास तथा नासिक के प्रेस केन्द्र सरकार के अधीन है। जबकि हैदराबाद तथा साहबाती के प्रेस RBI के अधीन है।

देवदास प्रिंटिंग प्रेस (मध्यप्रदेश) - यह केन्द्र सरकार का सबसे बड़ा नोट का प्रेस है इसे बैंक नोट प्रेस कहते हैं इसमें 20, 50, 100 तथा 500 नोट छापते हैं।

नासिक प्रिंटिंग प्रेस - इसे Currency नोट प्रेस कहते हैं। यहाँ 10, 50, 100, 500 तथा 2,000 के नोट छापते हैं। हैदराबाद तथा साहबाती के प्रेस सबसे आधुनिक हैं। इसमें सभी प्रकार के नोट छापते हैं।

Mint (टक्काल) - सिक्का बनाने वाले मशीन को टक्काल कहते हैं। भारत में 5 टक्काल है।

- (i) मुम्बई 1830 सबसे पुराना
- (ii) चेरापली तमिलनाडु
- (iii) हैदराबाद
- (iv) कलकत्ता
- (v) नोएडा यह सबसे आधुनिक है, इसकी स्थापना 1989 हुई।

Note : कलकत्ता टक्काल में भारत रत्न तथा शेष पदक एवं तमगा बनता है।

मुद्रा

मुद्रा - किसी वस्तु ने विनिमय के काम में आती है। यह दो वस्तु में अंतर स्पष्ट कर सकती है। यह गुणवत्ता की पहचान कर सकती है।

मुद्रा के प्रकार -

(i) धातु मुद्रा - इस मुद्रा का आंतरिक मूल्य होता है। अर्थात् धातु की अहमियत होती है। इसमें टूट-फूट होने पर मूल्य में अंतर नहीं होता है। Eg : सोना चांदी का सिक्का

(ii) कागजी मुद्रा - इस मुद्रा का कोई आंतरिक मूल्य नहीं होता है बल्कि इस पर किए हस्ताक्षर रंग तथा फोटो का महत्व होता है। जैसे-भारत का रुपया।

(iii) विधि ग्रह मुद्रा (Legal tender money) - किसी देश के अंदर की वैसी मुद्रा जिसे स्वीकार करना अनिवार्य हो legal tender कहलाता है। eg: जापान में येन, भारत में रुपया, etc.

(iv) सस्ती मुद्रा (Cheap money) - वैसी मुद्रा जिसका ब्याज दर कम हो सस्ती मुद्रा कहलाती है।

Eg : विकासशील देशों की मुद्रा, नेपाल, भारत

(v) महंगी मुद्रा (Dear money) - वैसी मुद्रा जिसका ब्याज दर अधिक हो महंगी मुद्रा कहलाती है।

(vi) दुर्लभ मुद्रा (Hard money) - इस मुद्रा का मांग अधिक होता है तथा पूर्ति कम होती है। eg : डालर

(vii) सुलभ मुद्रा (Soft money) – वैसी मुद्रा जिसका मांग कम हो और पूर्ति अधिक हो Soft money कहलाती है। eg : वेनेजुएला का मुद्रा

(viii) गर्म मुद्रा (Hot money) – वैसी मुद्रा जिसके मूल्य बहुत तेजी से परिवर्तन हो तथा लाभ वाले स्थान पर चली जाय गर्म मुद्रा कहलाती है इसका प्रयोग बड़े उद्योगपति तथा व्यापारी करते हैं।

1 \$ = 100 Rs

100 \$ = 1 lakh

1 \$ = 50 Rs

1000 \$ = 50,000 Rs.

प्रतिबंधित मुद्रा – वेसी मुद्रा जो IMF के NEER का पालन न करके अपने देश मुद्रा को स्वतः घटा बढ़ा देती है। प्रतिबंधित मुद्रा कहलाती है। eg: चीन का युआन

(ix) Cryp to currency – यह एक Virtual मुद्रा है। यह एक विशेष प्रकार की software से बना है जिसका केवल Online लेन-देन ही संभव है। सबसे बड़ी Crypto-currency, Bit Coin है। जिसकी खोज सातोसी नाकामोटो ने किया है। वेनेजुएला की Crypto-currency petro, Face book की Crypo-currency libra है।

(x) प्लास्टिक मनी – इसमें सभी प्रकार के क्रेडिट कार्ड डेविड कार्ड तथा ड्राफ आते हैं।

विमुद्रीकरण (Demonetisation) – जब देश में काला धन अधिक बढ़ जाए तो सरकार नोट बदल देती है जिससे काला धन स्वतः समाप्त हो जाता है। भारत में पहली बार विमुद्रीकरण 1978 में मोरारजी देसाई ने किया दूसरी बार भी मुद्रीकरण 8 नवम्बर, 2016 का मोदीजी ने किया।

अवमूल्यन – जब अपने देश की मुद्रा को जान बुझकर गिरा दिया जाता है, तो उसे अवमूल्यन कहते हैं। अवमूल्यन से निर्यात बढ़ जाता है और विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि हो जाती है।

इससे निर्यातक देश को लाभ होता है किंतु आयातक देश को घाटा होता है। भारत में तीन बार अवमूल्यन का गाय -

(i) 1949, (ii) 1966, (iii) 1991

सबसे ज्यादा अवमूल्यन 1991 के दौरान हुआ। 1991 में दो चरणों में अवमूल्यन हुआ।

SDR (Special Drawing Right) – इसका प्रारंभ IMF ने किया SDR को कागजी स्वर्ण कहा जाता है। (Paper Gold) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार SDR के पाँच मुद्रा में से किसी एक में हो सकती है। SDR में निम्न पाँच मुद्राएं आती हैं- (i) \$ डॉलर (U.S.A.) (ii) P (पाउण्ड) ब्रिटेन (iii) £ यूरो (यूरोप) (iv) ¥ (येन) जापान (v) युआन (चीन)

Inflation (मुद्रा-स्फीति) – मुद्रा का अत्यधिक बढ़ जाना मुद्रा स्फीत कहलाता है। मुद्रा स्फीति के कारण महंगाई बढ़ जाती है। तरलता के आधार पर मुद्रा स्फीति को चार भाग में बाँटते हैं।

(i) रेगती मुद्रा स्फीति (ii) चतली मुद्रा स्फीति

(iii) दौड़ती मुद्रा स्फीति (iv) अति मुद्रा स्फीति

मुद्रा स्फीति (महंगाई) के उत्पत्ति के दो कारण हैं-

(i) लागत प्रेरित मुद्रा स्फीति – इसमें लागत बढ़ जाता है, जिस कारण महंगाई बढ़ जाती है।

Eg : कोयला का रेट बढ़ने, चाय का महंगा होना

(ii) माँग प्रेरित मुद्रा स्फीति – इसमें भाग के बढ़ने से महंगाई बढ़ जाती है। Eg : लगन में D.J.

Note : लागत प्रेरित मुद्रा स्फीति अधिक खतरनाक होती है, क्योंकि यह स्थाई रहती है। मुद्रा स्फीति में मुद्रा बढ़ जाता है जिस कारण कार्य शक्ति माँग तथा महंगाई तीनों बढ़ जाता है, किन्तु मुद्रा का मूल्य घट जाता है। जिस कारण रोजगार पर लगा व्यक्ति भी बाजार कीमत पर रोजगार नहीं पा पाता है और बेरोजगारी का स्तर बढ़ जाता है।।

मुद्रा स्फीति से लाभ – ऋणि (देनदार), किसान, उद्योगपति व्यापारी परिवर्तित आय वाला व्यक्ति।

मुद्रा स्फीति से हानि – ऋणदाता (लेनदार), स्थिर आय, वाला व्यक्ति।



मुद्रा स्फीति के रोकने के उपाय को अपस्फीति कहते हैं। इसे रोकने प्रतिभूति की बिक्री तथा उत्पादन को बढ़ा देना चाहिए तथा मौद्रिक नीति को कठोर कर देना चाहिए।

मंदी – मंदी वह स्थिति है जिसमें तरलता अत्यधिक घट जाती है। जिस कारण व्यापार प्रभावित हो जाता है अधिक देर तक मंदी रहने से अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

Stagflation – जब मंदी तथा मुद्रास्फीति दोनों एक साथ हो जाए तो उसे Stagflation कहते हैं। इस स्थिति में पहले मंदी को ठीक करने के लिए तरलता बढ़ा देना चाहिए उसके बाद मुद्रा स्फीति को ठीक करना चाहिए।

